कविता

धापू

के.आर.शर्मा*

छह-सात महीने की हुई धापू
धीरे-धीरे बैठना सीख गई!

दस-ग्यारह महीने की हुई धापू
धीरे-धीरे चलना सीख गई!

दौड़ती-गिरती-उठती-दौड़ती
तुतलाती ज़बान में बतियाती धापू!

धापू बकरी को कुत्ता समझने की गलती नहीं करती
वह तो गली-मोहल्ले भर की पहचान रखती !

एक दिन, धापू स्कूल गई
स्कूल में खूब खेलती, मज़े करती !

मास्साब धापू के साथ किस्सागोई करते
कंकड़ों, बीजों, पत्तों, फूलों, कागज़ के टुकड़ों में रमती !

कभी किताबों को उलट-पलट करती
कभी मुँडेर पर सँभलते हुए चलती !

कभी किताबों में झाँकती
कभी रंग-रोगन करती !

मास्साब मन-ही-मन सोचते
बच्ची कितनी काबिल है !

मास्साब सोचते
कहीं सीखने की ताकत कुचल न जाए !

* जशोदा नरोत्तम पब्लिक चैरिटी ट्रस्ट, नगरिया रोड, बलिया देव मंदिर के पास, धरमपुर, जिला-बलसाड (गुजरात), पिन-396050

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा एना प्रिन्टो ग्राफिक्स प्रा.लि., 347-के, उद्योग केन्द्र एक्स-II, ग्रेटर नोएडा- 201306 द्वारा मुद्रित।